उत्पत्ति 2:8-9

“और यहोवा परमेश्वर ने ईदन में एक बगीचा लगाया, जो पूर्व में था, और वहाँ उसने उस मनुष्य को रखा जिसे उसने बनाया था। और पृथ्वी से यहोवा परमेश्वर ने हर वह वृक्ष उगाया जो देखने
में सुहावना और खाने में अच्छा था। और बगीचे के बीच में जीवन
का वृक्ष और भला-बुरा जानने का वृक्ष था।”

1. हर वृक्ष जो देखने में सुहावना और खाने में अच्छा है

परमेश्वर ने आदम के लिए पर्याप्त व्यवस्था की—फलदार वृक्ष जो “देखने में सुहावने और खाने में अच्छे” थे (उत्पत्ति 2:9)। यह दर्शाता है कि परमेश्वर ने सृष्टि में मानव की ज़रूरतों की पूरी तरह से देखभाल की और उसकी उदारता दिखाई (भजन संहिता 104:14-15)। आदम को इन वृक्षों से परहेज करने का आदेश नहीं था; उन्हें परमेश्वर की कृपा का आनंद लेने की स्वतंत्रता दी गई थी (उत्पत्ति 1:29)।

यह संपन्नता दिखाती है कि पतन (Fall) से पहले परमेश्वर की सृष्टि पूरी तरह अच्छी और भलाई से भरी हुई थी।

2. बगीचे के मध्य में जीवन का वृक्ष

यह वृक्ष अनंत जीवन का प्रतीक था। इसका फल खाने से जीवन मिलता जो कभी समाप्त नहीं होता। यह जीवन केवल परमेश्वर से आता है। आदम के पाप के बाद जीवन के वृक्ष तक पहुँचना बंद हो गया (उत्पत्ति 3:22-24), यह दर्शाता है कि मानव पाप के कारण अनंत जीवन से अलग हो गया, जब तक कि परमेश्वर की कृपा से पुनर्स्थापित न हो।

यीशु मसीह स्वयं जीवन का सच्चा स्रोत हैं:

यूहन्ना 14:6
“यीशु ने कहा, मैं मार्ग, सत्य और जीवन हूँ; मुझ से बिना कोई पिता के पास नहीं आता।”

यूहन्ना 6:47-51
“सत्य-सत्य मैं तुमसे कहता हूँ, जो कोई विश्वास करता है,
उसका अनन्त जीवन है। मैं जीवन का अन्न हूँ… जो इस अन्न को खाएगा वह अनंतकाल तक जीवित रहेगा।”

यह सिद्धांत बताता है कि उद्धार केवल विश्वास के द्वारा और केवल यीशु मसीह में संभव है। अनंत जीवन कर्मों या किसी प्राकृतिक प्रयास से नहीं मिलता, बल्कि केवल मसीह के साथ मिलन से (इफिसियों 2:8-9)।

गैलातियों 5:22-23 में बताए अनुसार, इस जीवन का फल पवित्र आत्मा का फल है, जो परमेश्वर की कृपा द्वारा आंतरिक परिवर्तन का प्रमाण है।

3. भला-बुरा जानने का वृक्ष

यह वृक्ष पाप और मृत्यु का प्रतीक है। परमेश्वर ने आदम से इसे खाने से मना किया और चेतावनी दी कि यदि वह खाएगा तो मृत्यु आएगी (उत्पत्ति 2:17)। यह वृक्ष परमेश्वर के अधिकार और मानव की जिम्मेदारी का प्रतीक है।

आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा न मानकर स्वतंत्रता को चुना, जिससे पतन हुआ (रोमियों 5:12)। पाप ने मानवता और पूरे संसार में आध्यात्मिक और शारीरिक मृत्यु ला दी (रोमियों 6:23)।

साँप, जिसे बाद में शैतान कहा गया (प्रकाशितवाक्य 12:9), ने छल से मानवता को लुभाया (उत्पत्ति 3)। यह प्रलोभन मानव गर्व और

परमेश्वर से अलग अपनी इच्छा को बढ़ावा देता है (1 यूहन्ना 2:16)।

आध्यात्मिक वास्तविकता और आज का चुनाव

इन दो वृक्षों के बीच का चुनाव आज भी आध्यात्मिक रूप से जारी है:

जीवन का वृक्ष → मसीह में विश्वास और आज्ञाकारिता, जो अनंत जीवन की ओर ले जाता है (यूहन्ना 3:16)।
भला-बुरा जानने का वृक्ष → विद्रोह और पाप, जो मृत्यु की ओर ले जाता है
(रोमियों 6:23)।

पौलुस हमें चेतावनी देते हैं:

रोमियों 6:16
“क्या तुम नहीं जानते कि जो कोई किसी के अधीन दास बनकर अपनी सेवा देता है, वह उसी का दास होता है जिसके अधीन वह है—या तो पाप का, जो मृत्यु देता है, या आज्ञाकारिता का, जो धार्मिकता देता है?”

बाइबिल स्पष्ट रूप से कहती है कि अनंत जीवन केवल यीशु मसीह में है (प्रेरितों के काम 4:12)। पाप चुनने से हम परमेश्वर से

अनंतकाल के लिए अलग हो जाते हैं (मत्ती 25:46)।

परमेश्वर की कृपा आज भी तत्काल है (इब्रानियों 3:7-8)। आज ही जीवन का चुनाव करें, यीशु मसीह के माध्यम से (व्यवस्थाविवरण 30:19; 2 कुरिन्थियों 6:2)।

अंतिम प्रश्न

क्या आपने यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है?
क्या आपने पवित्र आत्मा प्राप्त किया है? (प्रेरितों के काम 2:38; इफिसियों 1:13-14)

ईश्वर की कृपा आपको अनंत जीवन की ओर मार्गदर्शन करे।.

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp